Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 5

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

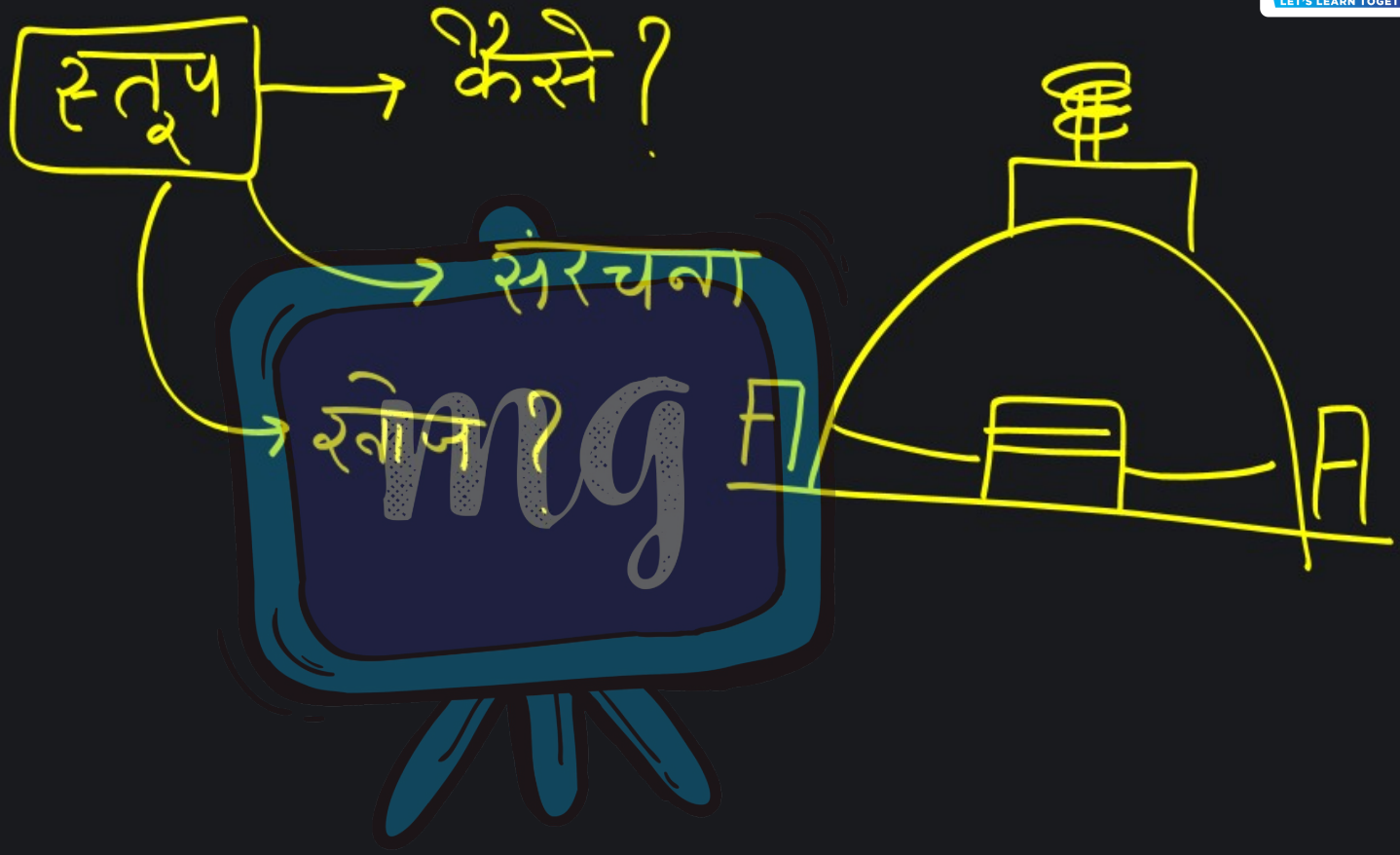

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

[illegible] का इतिहास :-

अमरावती –

- 1796 में एक स्थानीय राजा को जो मंदिर बनाना चाहते थे, अचानक अमरावती के स्तूप के अवशेष मिल गए। उन्होंने उसके पत्थरों के इस्तेमाल करने का निश्चय किया। उन्हें ऐसा लगा कि इस छोटी सी पहाड़ी में संभवतः कोई खज़ाना छुपा हो।
- कुछ वर्षों के बाद कॉलिन मेकेंज़ी नामक एक अंग्रेज़ अधिकारी इस इलाके से गुज़रे। उन्हे वहां कई मूर्तियाँ मिलीं उन्होंने उनका चित्रांकन भी किया, लेकिन उनकी रिपोर्टें कभी छपी नहीं।
- 1854 में गुंटूर (आंध्र प्रदेश) के कमिश्नर ने अमरावती की यात्रा की। उन्होंने कई मूर्तियाँ और उत्कीर्ण पत्थर जमा किए और वे उन्हें मद्रास ले गए। (इन्हें उनके नाम पर एलियट संगमरमर के नाम से जाना जाता है)।
- उन्होंने पश्चिमी तोरणद्वार को भी खोज निकाला और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अमरावती का स्तूप बौद्धों का सबसे विशाल और शानदार स्तूप था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

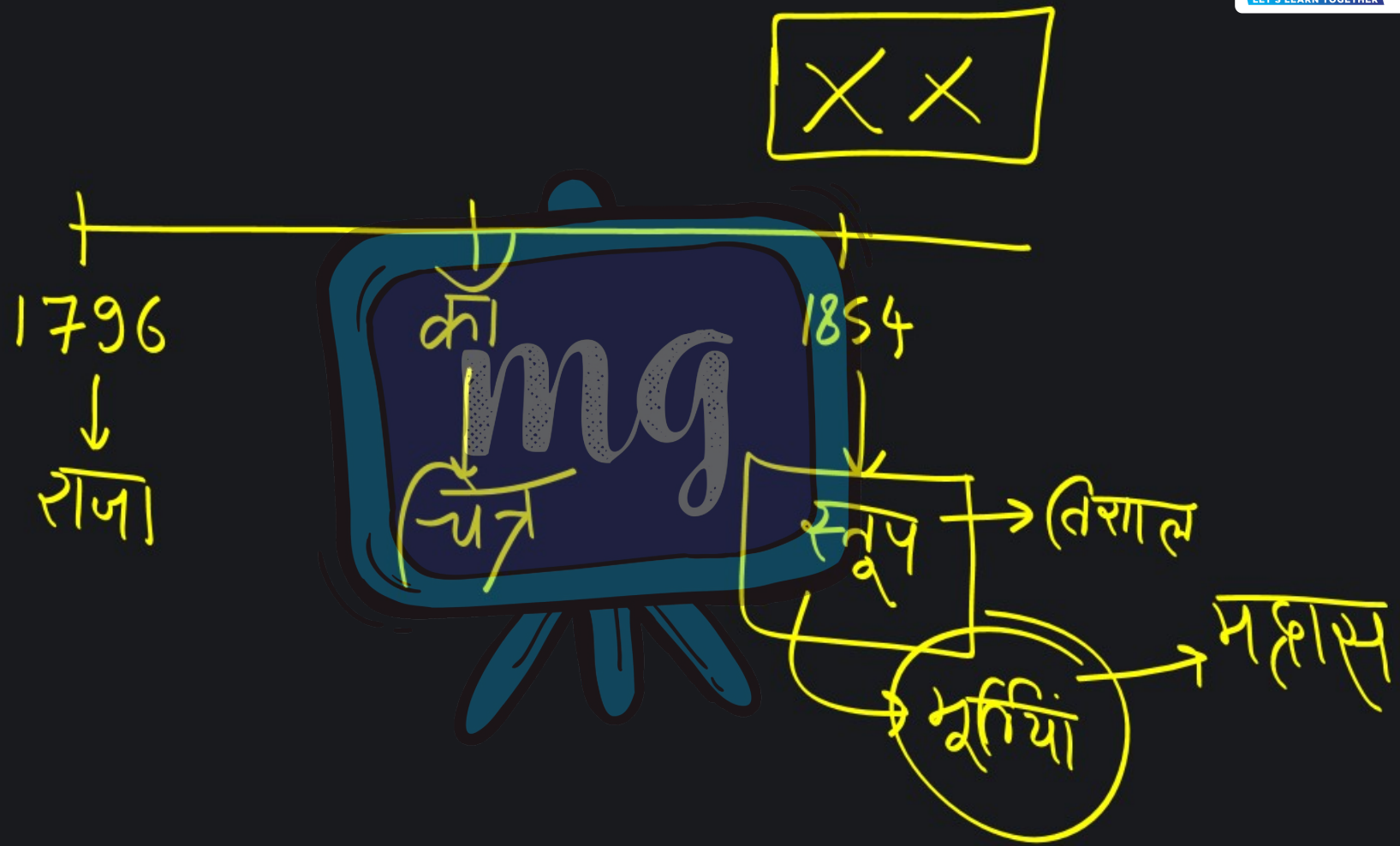

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

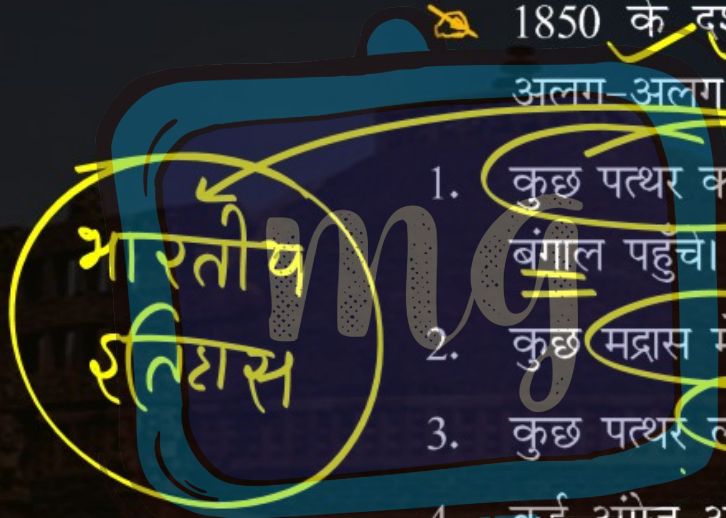

- 1850 के दशक में अमरावती के उत्कीर्ण पत्थर अलग-अलग जगहों पर ले जाए जा रहे थे।
  1. कुछ पत्थर कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ़ बंगाल पहुँचे।
  2. कुछ मद्रास में इंडिया ऑफिस।
  3. कुछ पत्थर लंदन तक पहुँच गए।
  4. कई अंग्रेज़ अधिकारियों के बागों में अमरावती की मूर्तियाँ पाना कोई असामान्य बात नहीं थी।
- इस इलाके का हर नया अधिकारी यह कहकर कुछ मूर्तियाँ उठा ले जाता था कि उसके पहले के अधिकारियों ने भी ऐसा किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

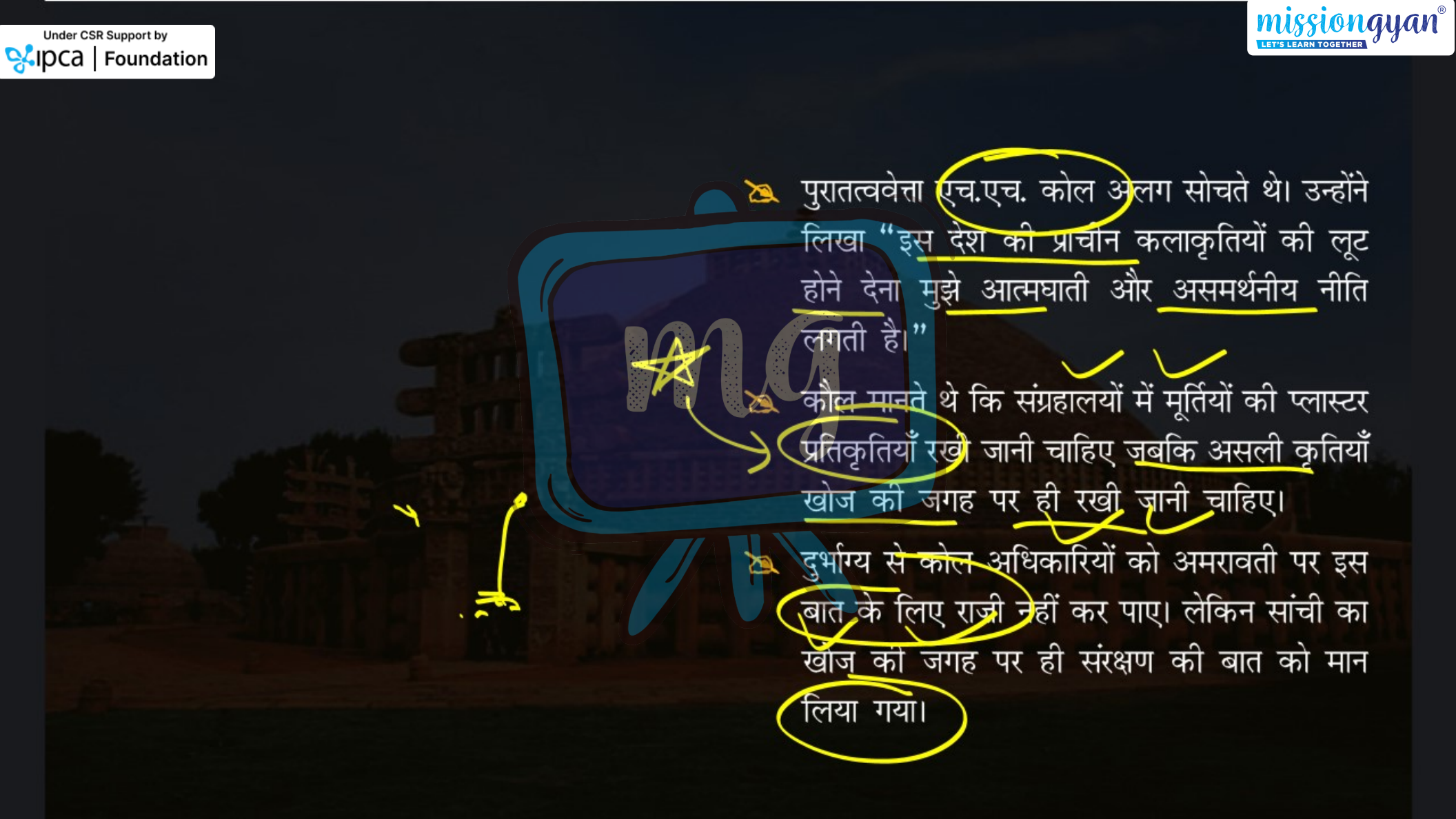

- पुरातत्ववेत्ता एच.एच. कोल अलग सोचते थे। उन्होंने लिखा "इस देश की प्राचीन कलाकृतियों की लूट होने देना मुझे आत्मघाती और असमर्थनीय नीति लगती है।"
- कौल मानते थे कि संग्रहालयों में मूर्तियों की प्लास्टर प्रतिकृतियाँ रखी जानी चाहिए जबकि असली कृतियाँ खोज की जगह पर ही रखी जानी चाहिए।
- दुर्भाग्य से कोल अधिकारियों को अमरावती पर इस बात के लिए राज़ी नहीं कर पाए। लेकिन सांची का खोज की जगह पर ही संरक्षण की बात को मान लिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

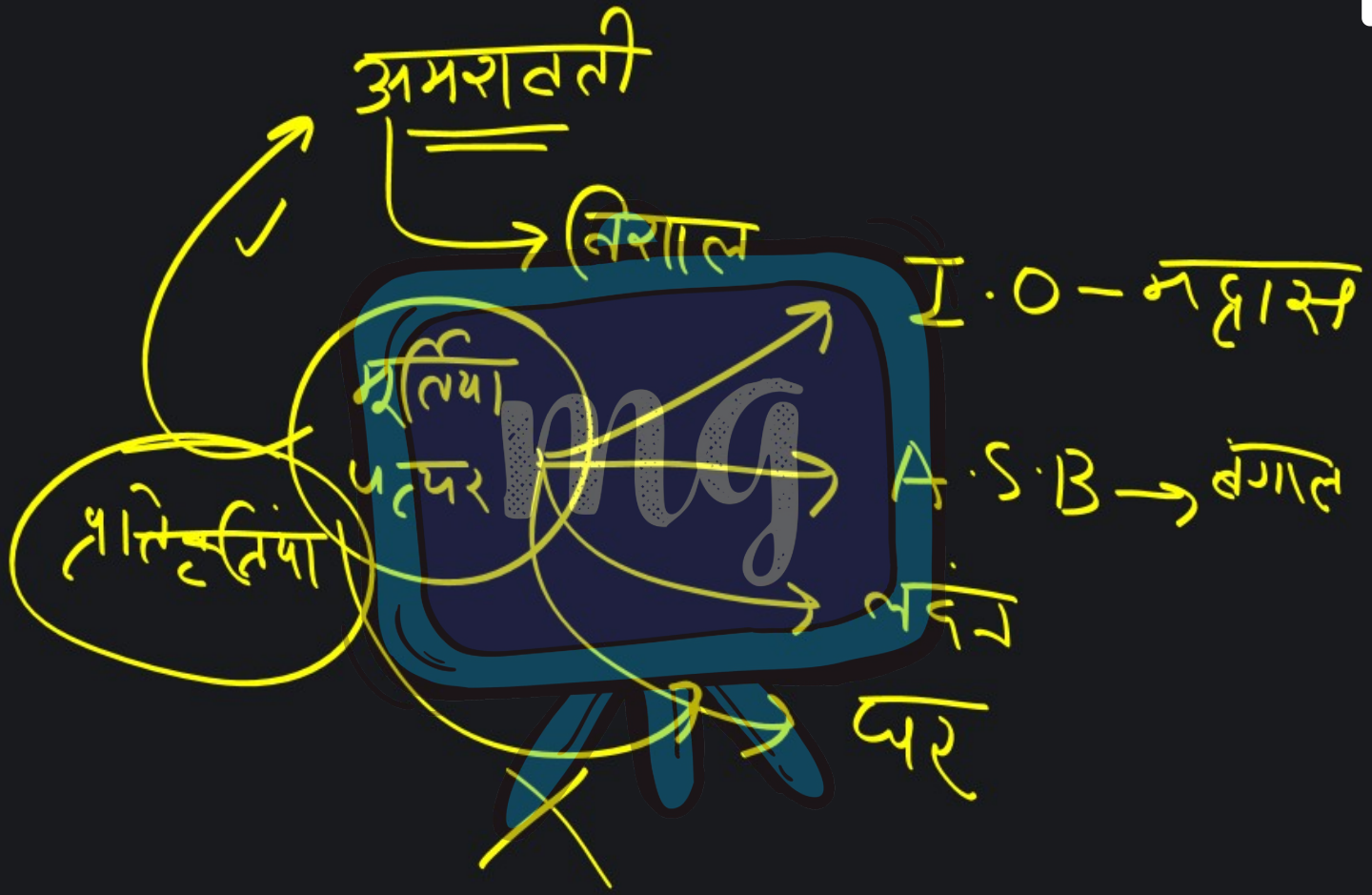

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साँची :-

- साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया?
- शायद अमरावती की खोज थोड़ी पहले हो गई थी। तब तक विद्वान इस बात के महत्त्व को नहीं समझ पाए थे कि किसी पुरातात्विक अवशेष को उठाकर ले जाने की बजाय वहीं पर ही संरक्षित करना कितना महत्वपूर्ण था।
- 1818 में जब साँची की खोज हुई, इसके तीन तोरणद्वार तब भी खड़े थे। चौथा वहीं पर गिरा हुआ था।
- तब टीला भी अच्छी हालत में था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

धर्मचक्र परिवर्तन



सांची का पूर्वी तोरणद्वार
सजीव मूर्तियां

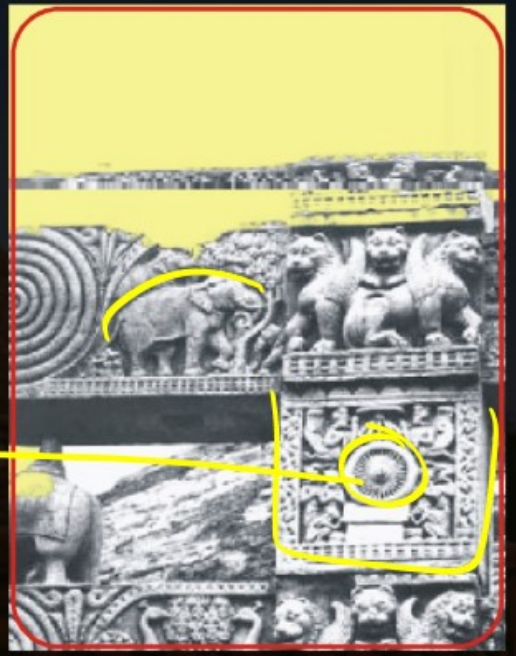

तोरण का एक हिस्सा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- उस समय यह सुझाव आया कि तोरणद्वारों को पेरिस या लंदन भेज दिया जाए। अंतत: कई कारणों से साँची का स्तूप वहीं बना रहा और आज भी बना हुआ है।
- जबकि अमरावती का महाचैत्य अब सिर्फ एक छोटा सा टीला है जिसका सारा गौरव नष्ट हो चुका है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सांची का स्तूप क्यो सरक्षित है जबकी अमरावती का स्तूप नष्ट हो गया?

	अमरावती	सांची
1	पहले	बाद मे
2	राजकीय मदद ✗	राजकीय मदद → सुलतान जहा
3	अधिकारी ✗	जॉन मार्शल → DG.
4	संरक्षित ✗	संग्रहालय

mg

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तिकला

सांची के उत्तरी तोरण द्वार का एक हिस्सा :-



- पहली बार देखने पर तो इस मूर्तिकला अंश में फूस की झोंपड़ी और पेड़ों वाले ग्रामीण दृश्य का चित्रण दिखता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

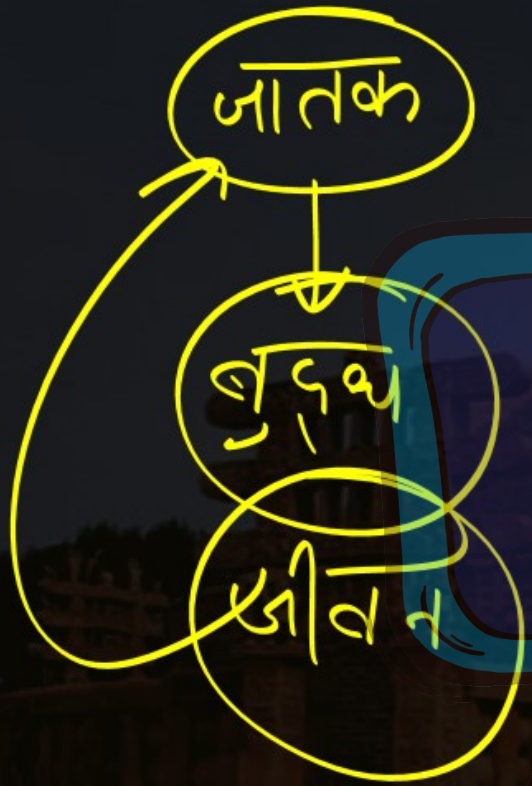

- परन्तु इतिहासकार जिन्होंने सांची की इस मूर्तिकला का गहराई से अध्ययन किया है, इसे वेसान्तर जातक से लिया गया एक दृश्य बताते हैं।
- यह कहानी एक ऐसे दानी राजकुमार की है जिसने अपना सब कुछ एक ब्राह्मण को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।
- इस उदाहरण से स्पष्ट है कि अक्सर इतिहासकार किसी मूर्तिकला की व्याख्या लिखित साक्ष्यों के साथ तुलना के द्वारा करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

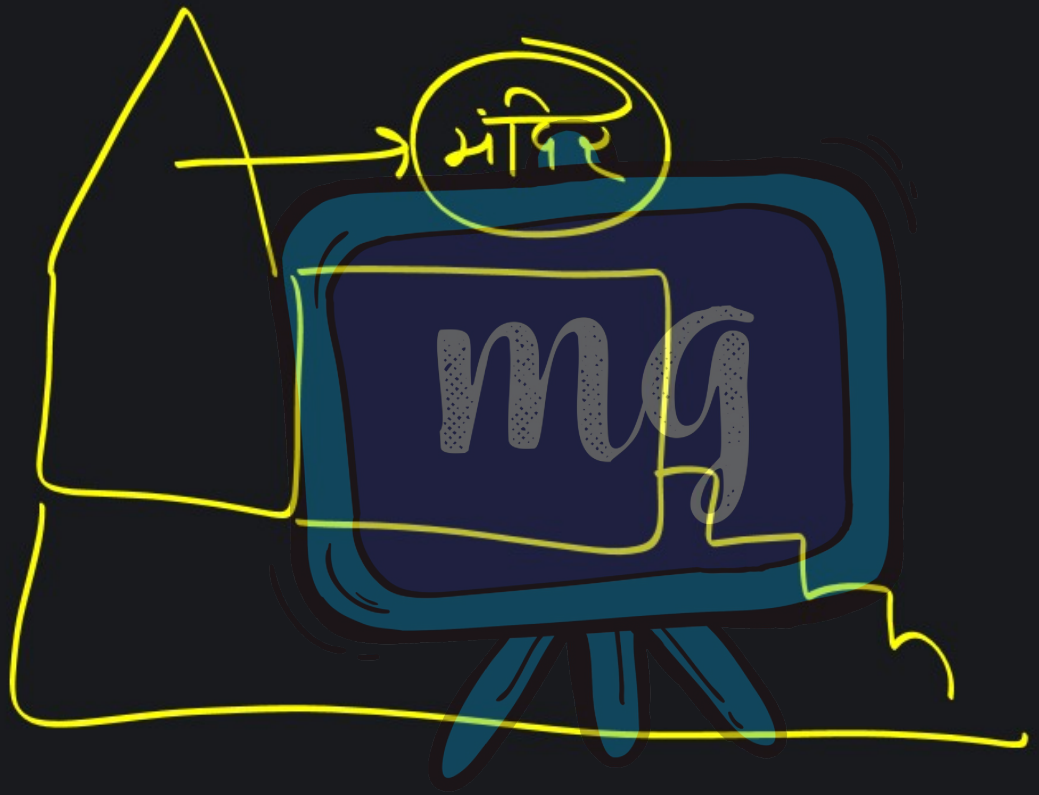

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बोधि वृक्ष की पूजा



चित्र में वृक्ष, आसन और उसके चारों ओर जन समुदाय का चित्रण है।

- इसमें बुद्ध के स्थान पर बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति वाला वृक्ष दर्शाया गया है।

उपासना के प्रतीक

- बौद्ध-मूर्तिकला को समझने के लिए इतिहासकारों के बुद्ध के चरित लेखन को समझना पड़ा।
- बौद्ध चरित लेखन के अनुसार एक वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- कई प्रारम्भिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में न दिखाकर उनके स्थान पर प्रतीकों को दर्शाया।

प्रतीक → बोधी → ○

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

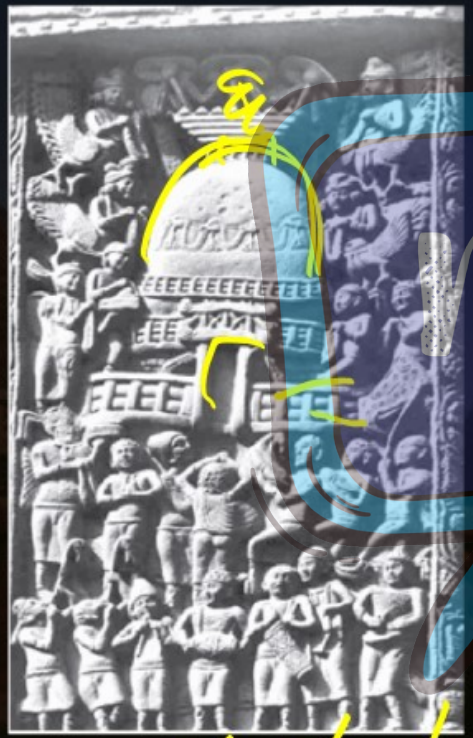

स्तूप की पूजा

- बुद्ध के ध्यान की दशा तथा स्तूप महापरिनिब्बान के प्रतीक बन गये।

- चक्र का भी प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है।
- ऐसी मर्तिकला को अक्षरश: नहीं समझा जा सकता है।
- उदाहरणत: पेड़ का तात्पर्य केवल एक पेड़ नहीं था वरन् यह बुद्ध के जीवन की एक घटना का प्रतीक था।
- अत: यह आवश्यक है कि ऐसे प्रतीकों को समझने के लिए इतिहासकार कलाकृतियों के निर्माताओं की परंपराओं को जानें।



धर्मचक्र प्रवर्तन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

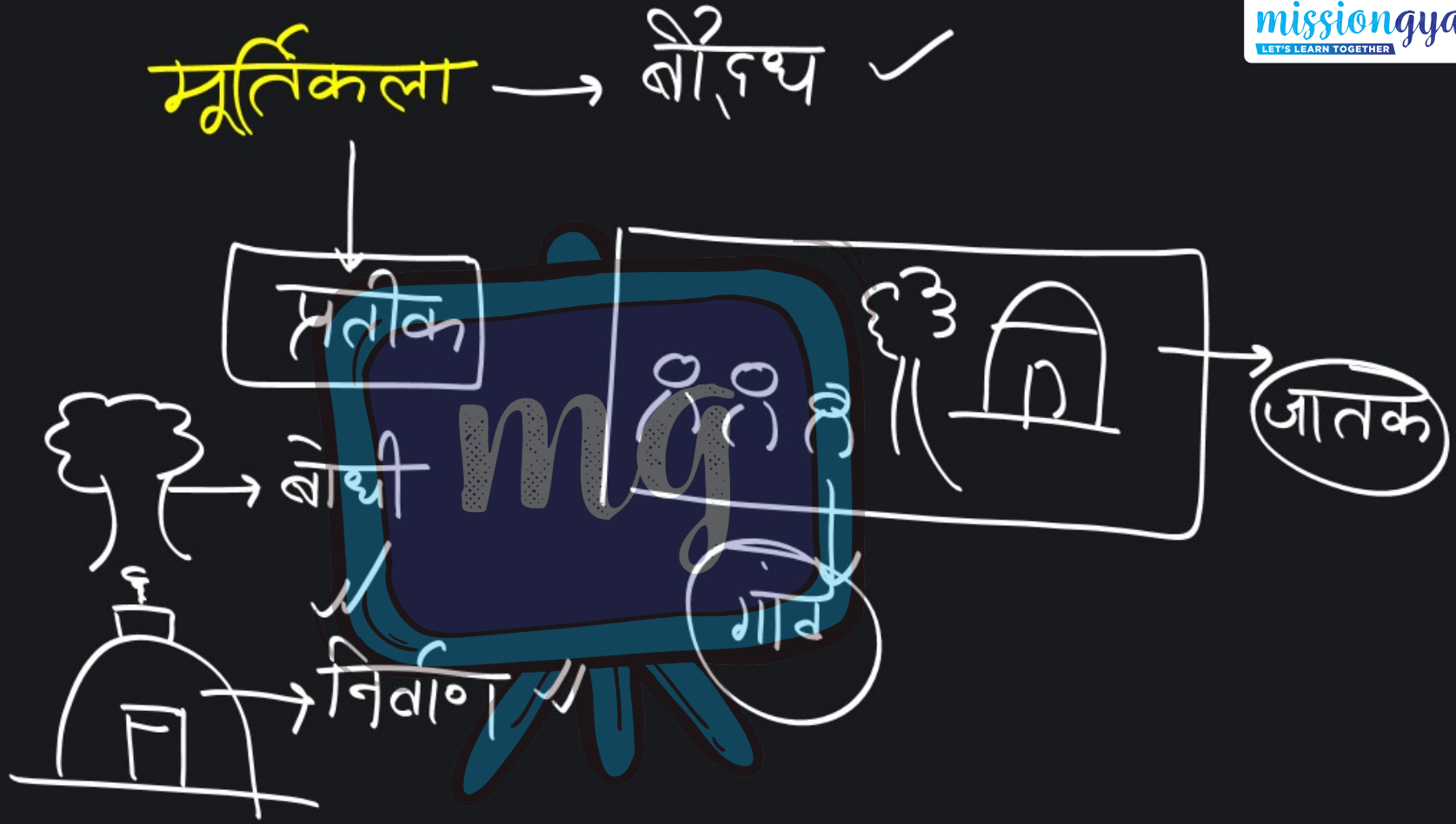

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बौद्ध मूर्तिकला मे प्रतीक चिह्नो का इस्तेमाल किस प्रकार किया जाता था ?

